

7, 56, 22. 61, 3. 70, 3. वि तिष्ठधं मरुतो वित्विच्छतं 104, 18. = प्रवेश
Kingang H. an. 1, 15. *Viçva* im ÇKDn. — b) *Gemeinde* (zunächst die
 kleinere Vereinigung innerhalb des Volks); *Stamm, Volk*; = *मनुज* u. s. w.
 AK. 3, 4, 38, 216. H. 337. H. an. MED. Ç. 13. HALĀ. 2, 176. अस्त्रीयसे
 युष्मांश्च देवान्विश आ च मर्तान् RV. 4, 2, 3. स इक्ष्नेन स विशा स जन्मना
 स पुत्रैर्विशं भरते 2, 26, 3. विशो कविं विष्पतिं शश्वतीनाम् 6, 1, 8. स यद्वि-
 शो ऽयत्त शूरासाता 26, 1. 8, 60, 11. पत्ये, गृह्य-यः, अस्यै सर्वस्यै विशे AV.
 14, 2, 27. युष्माः RV. 4, 24, 4. आर्याः 10, 11, 4. विशो मनुष्यान् 6, 47, 16. मा-
 नुषीः 10, 80, 6. मनुषो विशोः 6, 14, 2. 8, 23, 13. दिवः 6, 16, 9. उमे विशो 9,
 70, 4 (vgl. KĪTH. 11, 6). दिव्या 88, 7. देवोः 3, 34, 2. AV. 6, 98, 2. VS. 17,
 86. दासीः RV. 4, 28, 4. 6, 23, 2. अदेवीः 8, 83, 15. असिक्तीः 7, 3, 3. कृष्ण 8,
 62, 18. ÇAT. Br. 5, 1, 3, 5. 13, 2, 2, 19. तस्मै विशः स्वयमेवा नमते die Un-
 terthanen, Leute u. s. w. RV. 4, 30, 8. 6, 8, 4. 10, 124, 8. 173, 6. des Tr-
 ṇaskanda 1, 172, 3. der Trtsu 7, 33, 6. VS. 8, 46. यस्यै विशो राजा भ-
 वति ÇAT. Br. 5, 4, 2, 3. एदं सीदन्तु देवाः सर्वपा विशा पावन्तु RV. 5,
 26, 9. 8, 28, 3. विशो मरुताम् das Volk der Marut 5, 36, 1. माः 8, 12,
 29; vgl. TBR. 2, 7, 2. ÇAT. Br. 5, 4, 2, 8. auch andere Götterschaaren
 14, 4, 2, 24. विशो न युता उपसेत यतस्ते Mannschaft RV. 7, 79, 2. देवविशः
 कल्पयितव्या इत्याहुस्ताः कल्पमाना अमु मनुष्यविशः कल्पत इति सर्वा
 विशः कल्पते AIT. Br. 1, 9. तत्र च बलं च राष्ट्रं च विशं च 8, 24. TS. 2,
 3, 43, 4. तत्र वै यमो विशः पितरः ÇAT. Br. 7, 1, 2, 4. 13, 4, 2, 15. राज्ञः, वि-
 शः KAUSH. Up. 2, 9. वशानुगच्छापि विशो ऽथ कश्चित् MBh. 2, 1996. स-
 साधको विशाम् BHĀG. P. 2, 3, 4. यत्र दारपहरणं राजैव कुरुते विशाम्
 RĀGA-TAR. 4, 29. लवपोत्सौकसो विशाम् 6, 57. विशो पतिः (vgl. विष्पति
 und विद्वति) Bez. eines Fürsten MBh. 1, 6119, 3. 2103. 2412. 2477. 12039.
 3, 5960. HARIV. 14170 (fehlerhaft nom. st. voc. MIT. 142, 8). R. 2, 34, 17.
 61, 15. 6, 82, 33. RAGH. 1, 93. 3, 66. 3, 3. 10, 51 (विशो पत्युः). KATHĀS. 23,
 127. RĀGA-TAR. 1, 333. BHĀG. P. 4, 8, 6. 19, 39. विशो नाथः RAGH. ed. Calc.
 4, 70. विशामीश्वरः RĀGA-TAR. 8, 109. विशो वरिष्ठः MBh. 4, 285. पूरुम-
 र्कतमं विशाम् BHĀG. P. 9, 19, 23. — c) Volk in dem engeren Sinne des
 brahmanischen Staates: die dritte Kaste (später वैश्य genannt) AK. 2,
 9, 1. 3, 4, 38, 216. H. 864. H. an. MED. HALĀ. 2, 415. ब्रह्म, तत्रम्, विट्
 ÇAT. Br. 2, 1, 3, 5. 8, 7, 2, 3. 13, 2, 9, 6. PĀNĀV. Br. 18, 10, 9. BHĀG. P. 2, 1,
 37. ब्राह्मणानाम्, राज्ञाम्, विशाम् KĀND. Up. 8, 14. ब्राह्मणास्य, राज्ञः,
 विशः M. 2, 36. 38. 46. 3, 13. 10, 79. विशः स्त्री H. 897. विप्रः, तत्रियः,
 विशः, प्रदूः VARĀH. BRH. S. 53, 100. सस्यानि विशाम् M. 9, 247. 10, 120.
 ब्राह्मणतत्रियविशाम् 9, 155. तत्रियविशोः 8, 383. ब्रह्मतत्रियविशोः 2,
 80. तत्रविप्रदूयोनि 8, 62. 9, 229. प्रदूविप्रतत्रियविशाम् 8, 104. विप्रदूयोः
 3, 23. 8, 277. स्त्रोप्रदूविप्रतत्रियविशाम् 11, 66. विप्रदूयोः VARĀH. BRH. S. 5, 32. 8,
 52. विप्रतत्रियविप्रदूयोः 34, 19. एको विद्वयोः MBh. 13, 2620. विप्रदू-
 द्विजन्मनाम् MĀRK. P. 134, 24. — d) Besitz, Habe: pl. BHĀG. P. 8, 22, 24.
 — e) विशो साम N. eines Sāman Ind. St. 3, 236, b. — 2) nom. ag. in
 अन्विष्. — Vgl. देव°, मनुष्य°.

3. विष् f. fehlerhaft für विष् faeces H. 634. Schol. Verz. d. B. H.
 278, ÇI. 42.

विश 1) nom. act. von 1. विष् in इविश. — 2) am Ende eines comp.
 n. und f. आ = 2. विष्. अमुरविशं क वै देवानभ्युदचार्य आसीत् (wohl
 °चार्यासीत् AIT. Br. 6, 36; vgl. देव° und मनुष्य°. Am Ende eines adv.

comp. विशम् gaṇa शरदादि zu P. 5, 4, 107. Vor. 6, 62. — 3) m. N. pr.
 eines Mannes gaṇa शुभादि zu P. 4, 1, 132; vgl. वैशय. — 4) ungenaue
 Schreibart für विस, z. B. Suça. 2, 162, 17.

विशंवर f. eine kleine Hausdecke (पल्ली) RĀGA. im ÇKDn.

विशकल (2. वि + श°) adj. in Stücke gegangen: रथं चान्यैः सुबहुभि-
 शक्रे विशकलं शरैः MBh. 7, 3380. विशकलीकर zerstückeln, in Stücke
 brechen 6, 5653. 7, 780. 1571.

विशकलित (von विशकल) adj. gesondert, getrennt so v. a. verschie-
 den SĀH. D. 13, 10.

विशङ्क (2. वि + शङ्क) adj. 1) keine Scheu empfindend, unbesorgt:
 अतःकरण RAGH. 2, 11. प्राणत्यागं sich nicht scheuend das Leben hin-
 zugeben R. 4, 28, 24. विशङ्कम् adv. ohne Scheu DAÇAK. 86, 9. — 2) keine
 Scheu —, keine Furcht verursachend, sicher: पन्थाः KĀM. NĪTIS. 13, 13.
 — विशङ्का s. bes.

विशङ्कट adj. P. 5, 2, 28. f. आ und ई gaṇa बह्नादि zu 4, 1, 45. 1) aus-
 gedehnt, umfangreich AK. 3, 2, 10. H. 1429. HALĀ. 4, 68. विशङ्कटो-
 वत्तसि BHĀṬ. 2, 30. °कटोरकस्थली ÇIÇ. 13, 34. अटवी KATHĀS. 100, 10.
 विसंकटोत्कटदृढपरिधकपाटनोरणार्णल° PĀNĀT. ed. orn. 3, 7. — 2) un-
 gehemerlich, scheusslich, grauenhaft: दंष्ट्राकोटि° MĀLATI. 78, 2. KATHĀS.
 23, 105. 114, 107. 123, 8. वेतालतालवाद्य° (रणोत्सव) 108, 107. कोपाटो-
 पविसंकटं वदत्यां मातरि PĀNĀT. 46, 5. — Es liegt nahe der Schreibart
 विसंकट den Vorzug zu geben, da dieses sich einfach in वि + सं° zer-
 legt, aber PĀNINI's Schreibart durfte nicht unberücksichtigt bleiben.
 Dieselben Bedeutungen hat विकट.

विशङ्कनीय (von शङ्क mit वि) adj. Misstrauen verdienend, verdäch-
 tig: राजन् R. GORR. 2, 19, 22. मुखादिभ्यो ब्राह्मणादिनिर्माणं ब्रह्मणो न
 विशङ्कनीयम् KULL. zu M. 1, 31.

1. विशङ्का (von शङ्क mit वि) f. Bedenken in Bezug auf (loc.), Ver-
 dacht: दमयत्यां विशङ्का तामुपाकर्षत् MBh. 3, 2996. मयि ते मा विशङ्के-
 यम् R. GORR. 2, 99, 20. विशङ्का त्यस्यतामेषा 5, 31, 61. मनुष्यो ऽस्मि वि-
 शङ्का ते न कर्तव्यात्र कर्हिचित् MĀRK. P. 21, 53. — 2) Besorgniss, Scheu,
 aus Besorgniss hervorgehendes Zögern: परपुंसो विशङ्कया MĀRK. P. 78, 22
 = 108, 8. धर्मलोपविशङ्कया R. GORR. 2, 20, 30. आत्मोच्छित्तिविशङ्कया
 KĀM. NĪTIS. 8, 64. मा विशङ्का कुरुष्व trage kein Bedenken MBh. 2, 2037.
 अविशङ्कया ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern 3, 17038. 4,
 2322. 14, 111. HARIV. 3834. MĀRK. P. 20, 28. ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. Up. S.
 267. वीतविशङ्क adj. BHĀG. P. 10, 38, 19. स्वपिदि त्वं निर्गतविशङ्कः un-
 besorgt PĀNĀT. 124, 12. अ° adj. sich nicht bedenkend, nicht zögernd
 MBh. 13, 2747. अविशङ्कन मनसा 3, 2171. सविशङ्का adj. R. 2, 22, 6. —
 Vgl. निर्विशङ्क (auch R. 6, 16, 27).

2. विशङ्का (2. वि + शङ्क) f. Abwesenheit aller Besorgniss, — Scheu:
 विशङ्कया ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern BHĀG. P. 4, 24.
 67. 10, 82, 42.

विशङ्कन् (von शङ्क mit वि) adj. 1) vermuthend: क्षीमूतस्तनितविश-
 ङ्कभिर्मयैः MĀLAY. 20. वैश्वक्ताविशङ्कन् KATHĀS. 40, 72. — 2) befürch-
 tend, besorgend: नैवमस्मात् ते प्रीतिर्भवेदिति विशङ्कना KATHĀS. 14, 4.
 सर्वनाश° 17, 81. — अ° MBh. 8, 3505 fehlerhaft für अभिशङ्कन्, wie die
 ed. Bomb. liest.